P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-II* October-2015

समकालीन साहित्य में धूमिल

शगुन सिक्का
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज, श्री आनंदपुर साहिब

सारांश

समकालीन कविता का आरम्भ सांतवे द"ाक के पूवार्ध से माना जाना चाहिये, समकालीन कविता को 'साठोत्तरी कविता' के नाम से भी जाना जाता है। समकालीन कविता हिन्दी साहित्य में 'नयी कविता' के बाद के विभिन्न काव्य आन्दोलनों में से एक महत्त्वपूर्ण काव्य–आन्दोलन है। आधुनिक हिन्दी में 'छायावाद' के बाद सर्वाधिक विवादास्पद एवं कालाविध में सुदीर्घवाद कविताधारा अभी भी समकालीन ही है। अनेक समस्याओं, अनि"चताओं एवं संभावनाओं के रहते हुए 'समकालीन कविता' को एक काव्य आन्दोलन के रूप में स्वीकारा गया है, जिसका आरम्भ 1964 ई. से माना जाता है। समकालीन कविता अपने युग एवं परिवे"ा से सम्प्रक्त है।

मुख्य शब्द : समकालीन कविता, साठोत्तरी कविता।

प्रस्तावना

समकालीन कविता में चित्रित मानव जिन तनावों, विसंगतियों एवं कुण्ठाओं को लिए हुए जी रहा है, वे पूर्णतः यथार्थ हैं। समकालीन कविता में धूमिल को शब्दों का जादूगर कवि माना गया है। धूमिल मुक्तिबोध व राजकमल चौधरी दोनों स प्रभावित थे। परवर्ती समकालीन कवि प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित रहे है। इनका वास्तविक नाम सुदामा प्रसाद पाण्डेय है, इनका जन्म खेवली (वाराणसी) में 1906 ई. में हुआ, घर के दायित्व संभाल लेने हेतु ये ज्यादा ि"ाक्षा ग्रहण नही कर पाए, अनेक स्थानों पर नौकरी करने के कारण इन्हें काफी अनुभव प्राप्त था। तभी तो इनकी रचित कविताएं आम आदमी से लेकर संसद तक के मंत्रियों की स्थिति को द"ार्ाती है। समकालीन कविता में ग्रामीण एवं कस्बाई जीवन के साथ–साथ नगरीय जीवन भी अभिव्यक्त हुआ है, उसी प्रकार धूमिल के साहित्य में मानव की उत्तेजना, खीझ, आक्रो"ा, निरा"ाा, कुण्ठा, असन्तोष सब देखा जा सकता है। समकालीन कविता में इस मूल्य विघटन को हर स्तर पर अनुभूति का विषय बनाया गया है। 'धूमिल' की निम्न पंक्तियां इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं :

मैं देखता रहा
हर तरफ ऊब थी
स"ाय था
नफरत थी।
मगर हर आदमी अपनी
जरुरतों के आगे सहाय था।

धूमिल की कविताएं लोक जीवन के अनेक तत्त्वों का समावे"ा अपने भीतर किए हुए है। धूमिल के तीन काव्य–संग्रह प्रका"ित है,

1. 'संसद से सड़क तक' 1972 सन् में प्रका"ित हुआ।
2. 'कल सुनना मुझे' 1977 सन् में राजे"वर द्वारा संपादित होकर प्रका"ित हुआ।
3. 'सुदामा पांडे का प्रजातंत्र' (1984 सन् में रत्न"ांकर द्वारा संपादित होकर प्रका"ित हुआ।

प्रथम कविता संग्रह में कविताओं का चयन एवं प्रतिपादन धूमिल ने स्वयं किया, पर द्वितीय व तृतीय काव्य–संग्रह में प्रतिपादित रचनाओं में अनेक लोगों की दृष्टि रही। यही कारण है कि उनके प्रका"ान सन् में पांच वर्षों के अंतराल के रहते हुए भी हमें 'कल सुनना मुझे' तथा 'सुदामा पांडे का प्रजातंत्र' की अधिका"ा कविताएं 'संसद से सड़क तक' में संकलित रचनाओ से पूर्व लिखित प्रतीत होती हैं। धूमिल सभी रचनाएं अलग–अलग अस्तित्व बनाए हुए है। कुछ कविताएं पारिवारिक विव"ाता से सम्बद्ध है, तो कुछ जनतांत्रिक व्यवस्था आर कुछ सामाजिक यथार्थ की परिचायक है। अधिका"ा कविताएं समस्याओं का लेखा–जोखा है। इनकी दृष्टि सदैव वर्तमान मूल्यहीनता की स्थिति पर रही है। यह अपनी कविताओं में दूसरे जनतंत्र की पहचान या तला"ा करता है :–

ऐसा जनजंत्र है जिसमें जिंदा रहने के लिए
घोड़े और घास को
एक जैसी छूट है
जनतंत्र एक तमा"ाा है
जनतंत्र जिसकी रोज सैंकड़ों बार हत्या होती है
'कल सुनना मुझे'
'धूमिल'

सही अर्थों में धूमिल समस्या–प्रस्तुति तथा मूल्य संकल्प का कवि है। धूमिल के काव्य के शब्दको"ाीय अर्थ तक सीमित नहीं है। व्यापक अर्थ–विस्तार इनको अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण आयाम है। इसलिए ये कवि भाषा उसके व्याकरण, वाक्य संरचना से पूरे परिवे"ा के बदलाव को रेखांकित करते है। धूमिल काव्यभाषा संवाद व सम्बोधन शैली वि"िाष्टता पूर्ण है ।

समकालीन कवि धूमिल का कथ्य बहुआयामी है–एक प्रवृत्ति वि"ोष तक सीमित नहीं है। इन्होंने मूल्य दृष्टि विविध धरातलों पर समसामयिक यथार्थ को पहचानने का प्रयास किया है। समकालीन के हर कवि भान्ति धूमिल ने भी परिवे"ा में व्याप्त मूल्यहीनता की विविध स्थितियों को खीझ आर आक्रो"ापूर्ण अभिव्यक्त प्रदान की तथा साथ–साथ मूल्य संकल्प को आत्मसात् किया है तथा नारी की दयानीय द"ाा के संकेत भी दिए है। नारी का यथार्थ पक्ष इन्होने अपनी रचना में प्रस्तुत किया है।

समकालीन हिन्दी कविता का कथ्य यथार्थ पर आधारित है। इसमें सामाजिक सरोकारों तथा मानव मूल्यों में बदलाव स्पष्ट है, इसकी प्रस्तुति में तीखापन और आक्रो"ा है, यही सारी वि"ोषताएं हमें धूमिल के काव्य में मिलती है, धूमिल ने अपने काव्य के माध्यम से राजनीतिक बदलाव व सामाजिक यथार्थ, परम्परा और आधुनिकता बोध के प्रति निजी दृष्टिकाण प्रस्तुत किया है। उनका काव्य ि"ाल्पगत नवीनता, शब्दों में नवीन प्रयोग स्थिति एवं मनोद"ाा के अनुकूल शब्द प्रयोग–को"ाीय अर्थ तक सीमित नही, बल्कि शब्द–प्रयोग में जादूगरी, स्वच्छंद विधान हैं।

धूमिल काव्य तो जीवन से सीधा प्रत्यक्ष साक्षात्कार है। 'संसद से सड़क तक' म इन्होंने समकालीन काव्य वि"ोषताओं को ही द"ार्ाया है, राजनीति के बदलाव तथा जनतांत्रिक व्यवस्था के प्रति आक्रो"ा एवं तोक्षण व्यंग्य प्रहार है । अपने काव्य द्वारा अन्तर्विरोधी की वास्तविकता को द"ार्ाया है, मोहभंग की स्थिति प्रकट की है उन्होंने स"ायात्मक स्थितियों को अपनी कविता में व्यजित किया है। धूमिल को तो यह लगता है–

'स"ाय की अनि"ाचयग्रस्त ठंडी मुद्राएँ हैं,
ळर तरफ शब्दबेधी सन्नाटा है,
दरिद्र की व्यथा की तरह,
उचार और कूंथता हुआ, घृणा में,
डूबा हुआ सारा का सारा दे"ा,
पहले की ही तरह आज भी, मेरा दे"ा कारागार है।'
(संसद से सड़क तक)

तीक्ष्ण व्यंग्य प्रहार समकालीनता बोध व धूमिल का मूलाधार है, काव्य में। व्यंग्य केवल मनोरंजन तक सीमित नही बल्कि सार्थक भूमिका का निर्वाह करते है ।

अतः समकालीन कविता की सही शुरुआत हम सुदामा पांडेय धूमिल से मानना सर्वथा उचित मानते है, धूमिल का समकालीन हिन्दी कविता में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, तभी तो पिछले कुछ समय से समकालीन कविता को धूमिलीय कविता व परवर्ती कविता में विभाजित कर वि"ालेषित किया जाने लगा है। धूमिल काव्य में ऐसे कथ्य, ि"ाल्प है, जो समकालीन कवियों व अनेक परवर्ती का मूलाधार बने। हमारी यह स्पष्ट धारणा है कि समकालीन हिन्दी कविता ने धूमिल की रचनात्मक को सर्वथा नवीन आयाम प्रदान किया तथा धूमिल ने इस कविताधारा को नयी अर्थवत्ता और विस्तारता दी। ऐसी स्थिति में हम धूमिल को समकालीन हिन्दी कविता का प्रवर्त्तक कवि मानते है । धमिल ने अपने काव्य द्वारा आम आदमी को जोड़ा है, उसकी स्थिति द"ार्ाई है। धूमिल ने हर आदमी को एक जोड़ी जूता माना है। धूमिल को '"ाब्दो का जादूगर' कवि स्वीकारा गया है। धूमिल एक ऐसे समकालीन कवि है, जिसने व्यवस्था राजनीतिक नेताओं स्थितियों पर तीक्ष्ण प्रहार किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. समकालीन हिन्दी कविता–वि"वनाथ प्रसार तिवारी ।
2. समकालीन कविता की भूमिका–वि"वम्भरनाथ उपाध्याय।
3. समकालीन हिन्दी कविता–डॉ. हुकमचन्द राजपाल ।
4. समकालीन हिन्दी आलोचना और अलोचना –डॉ. रामबक्ष।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल।